Roll No. ..... Total Pages: 04

5121

M.A. (FINAL) EXAMINATION, 2019

HINDI

Paper – I

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Time: Three Hours

Maximum Marks: 100

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 50]*

Answer five questions (250 words each).

Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

*Answer any **two** questions (300 words each).*

All questions carry equal marks.

*कोई **दो प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।*

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड – अ

प्र.1 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) कयमास वध में व्यक्त संदेश को लिखिए।

(2) कयमास वध में कौन से रसों का प्रमुखता से प्रयोग हुआ है, रसों के नाम लिखिए।

(3) कबीर के साधनात्मक रहस्यवाद को स्पष्ट कीजिए।

(4) कबीर के राम का स्वरूप व्याख्यायित कीजिए।

(5) सूर के भ्रमरगीत में 'प्रीति करि दीन्हीं गरै छुरी' पद के भाव को समझाइए।

(6) भ्रमरगीत में गोपियों के वाक्चातुर्य को प्रमाणित कीजिए।

(7) गोस्वामी तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।

(8) 'आगि बड़वागि तें बड़ी है आगि पेट की' पंक्ति के आधार पर तुलसी ने पेट की आग को समुद्र की आग से भी बड़ी क्यों बताया है?

(9) रीतिसिद्ध से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

(10) रीतिकालीन कवि घनानंद का परिचय दीजिए।

खण्ड – ब

इकाई – I

प्र.2 निम्नालिखित पद्यांश की सप्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

''राज ज प्रतिमा स चीन धर्मा रामा रमे सा मतीन्।

नित्तीरे कर कास वाम वसना संगेन सेज्या गति।

अंधारेन जलेन छिन्न क्षितया तारानि धारा रत।

सा मंत्री मयमास काम अंधा देवी विचित्रा गति।''

अथवा

प्र.3 महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर पृथ्वीराज रासो की समीक्षा कीजिए।

इकाई – II

प्र.4 निम्नलिखित पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

''कबीर सुता क्या करै, जागि न जपै मुरारि।

एक दिन सोवन होइगा, लम्बे पाँव पसारि।।

तूँ–तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही न हूँ।

वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ।।''

अथवा

प्र.5 कबीर के आध्यात्मिक दर्शन को समझाइये।

इकाई – III

प्र.6 निम्नालिखित पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

''उद्धव! यह मन निश्चय जानो।

मन क्रम बच मैं तुम्हैं पठावत, ब्रज को तुरत पलानो।।

पूरनब्रह्म सकल अविनासी ताके तुम हौ ज्ञाता।

रेख न रूप, जाति कुल नीहीं जाके नहिं पितु माता।

यह मत दै गोपिनु कहँ आवहु बिरह–नदी में भासति।

सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति।।''

अथवा

प्र.7 भ्रमरगीत के माध्यम से सूर के वियोग श्रृंगार के वैशिष्ट्य को सोदाहरण समझाइए।

इकाई – IV

प्र.8 निम्नलिखित पंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

''किसबी, किसान कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन गन–गहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम, धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा बेटकी।''

अथवा

प्र.9 तुलसी की समन्वय भावना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

इकाई – V

प्र.10 निम्नलिखित पंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''अजौं तर्‌यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इकरंग।
नाक–बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतन कै संग।।
तन्त्री–नाद कवित्त–रस, सरस राग, रति–रंग।
अनबूड़े बूड़े तरे जे बूड़े सब अंग।।''

अथवा

प्र.11 घनानंद को 'प्रेम की पीर' का कवि क्यों कहा जाता है? सोदाहरण प्रमाणित कीजिए।

खण्ड – स

प्र.12 'पृथ्वीराज रासो' की कथावस्तु को विस्तार से समझाइए।

प्र.13 कबीर की सामाजिक चेतना को उदाहरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्र.14 सूर के भ्रमरगीत की विशेषताओं को समझाइए।

प्र.15 ''तुलसी की कवितावली में रसों का सुंदर प्रयोग हुआ है''। उक्त कथन को प्रमाणित कीजिए।

प्र.16 ''बिहारी की सतसई श्रृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी है''। इस कथन को सोदाहरण समझाइए।